P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

शहरी एवं ग्रामीण माताओं में शिशु के पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

रीना चौरसिया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान विभाग,
महिला पी.जी. कॉलेज,
गोशाईगंज, अयोध्या, भारत

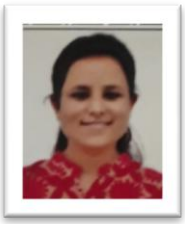

सुप्रिया रावत
शोध छात्रा,
प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग,
हे0न0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, भारत

सारांश

शिशुओं का पूरक आहार एक महत्वपूर्ण विषय है। पौष्टिक आहार व पोषण न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य, वृद्धि और विकास को ही प्रभावित करता अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के स्वास्थ्य एवं उत्पादन क्षमता पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है। पूरक आहार भावी पीढ़ियों की उत्तरजीविता, वृद्धि एवं विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन शहरी एवं ग्रामीण माताओं में बच्चों के पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन, उत्तराखण्ड के जनपद पौड़ी के तहसील श्रीनगर के 100 माताओं (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण माताओं) पर किया गया। उत्तरदाताओं का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण माताओं में शिशु हेतु पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार के अधिकांश क्रियाकलापों में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। मात्र एक क्रियाकलाप 'शिशु हेतु पूरक आहार स्वयं घर में तैयार करने में शहरी और ग्रामीण माताओं के कार्यव्यवहार' में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द : पूरक आहार, पोषण, कार्यव्यवहार, शिशु।

प्रस्तावना

बच्चे देश के सजीव संसाधन का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा तथा पोषण स्तर को पर्याप्त रूप से बनाये रखना आवश्यक है। मानव जीवन के प्रथम वर्ष के अन्तर्गत मानव विकास दर सर्वाधिक होती है और बच्चों की पौषणिक स्थिति निर्धारित करने में शिशु की आहार पद्धति, जिसमें स्तनपान एवं पूरक आहार सम्मिलित है की प्रमुख भूमिका होती है। मां का दूध शिशु पोषण और विकास के लिए अति महत्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि यह प्राकृतिक रोग–निरोधक शक्ति के साथ–साथ शिशुओं को भावनात्मक सुरक्षा भी प्रदान करता है।

छः माह के उपरान्त शिशु की बढ़ती हुई आवश्यकताओं एवं समग्र पोषण के लिए माता का दूध पर्याप्त नहीं होता है। बल्कि उसकी बढ़ती शारीरिक मांग के लिए अन्य पौष्टिक भोजन तत्वों की आवश्यकता होती है। अतः ऊपरी आहार अर्थात पूरक आहार द्वारा लौह लवण, आयोडिन एवं आवश्यक विटामिनों की पूर्ति की जानी चाहिए। वर्ष 2016 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वे–4 के अनुसार भारत में 6 माह के 50 प्रतिशत शहरी, 39.9 प्रतिशत ग्रामीण तथा कुल 42 प्रतिशत बच्चों को समय पर पूरक आहार शुरू किया गया।

छः माह में शिशु का वजन जन्म के समय का दोगुना और एक वर्ष पूरा होने पर उसका वजन तीन गुना हो जाता है तथा उसके शरीर की लम्बाई जन्म के समय से ड़ेढ़ गुना बढ़ जाती है। इस अवस्था में शिशु का शारीरिक आकार व उसके क्रियाकलापों मे वृद्धि होती है। इस वृद्धि एवं विकास को सुनिश्चित करने हेतु शिशु को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है जिसकी आपूर्ति पूरक आहार द्वारा की जा सकती है। पूरक आहार का उद्देश्य मां के दूध की सम्पूर्ति करना तथा यह सुनिश्चित करना है कि शिशु को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्वों की प्राप्ति होती रहे। लेकिन माता को चाहिए कि वह दो वर्ष की आयु में भी अपने बच्चे को पूरक आहार देने के साथ ही स्तनपान भी कराती रहे ताकि शिशु का उचित विकास हो सके।

भारतीय संस्कृति में शिशु को प्रथम आहार देने पर 'अन्नप्राशन' संस्कार सम्पन्न कराया जाता है। सामान्यतः शिशु को सर्वप्रथम गाय का दूध, दाल का पानी, खीर, दलिया तथा उबले फलों व सब्जियों को मसलकर आदि दिया जाता है। प्रारम्भिक पोषाहार तैयार करने में मुख्यतः खाद्यान्नों का प्रयोग किया जाता है। सूजी, गेहूं का आटा, चावल, रागी, बाजरा आदि से दलिया, खिचड़ी, पानी

अथवा दूध का प्रयोग करके पूरक आहार तैयार किया जाता है। पूरक आहार भावी पीढ़ियों की उत्तरजीविता, वृद्धि एवं विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जीवन की सभी अवस्थाओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण बाल्यावस्था का पोषण है। क्योंकि इससे न केवल जीवन पर्यन्त के लिए उत्तम स्वास्थ्य की बुनियाद पड़ती है अपितु देश को सक्षम श्रम शक्ति भी मिलती है।

वर्तमान में भारत का विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों की सूची में आठवां स्थान है। परन्तु स्वास्थ्य एवं पोषण के विषय में भारत का स्तर बहुत निम्न है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–4 के अनुसार 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषण के कारण लगभग 35.7 प्रतिशत बच्चों में शारीरिक भार की कमी और 38.4 प्रतिशत में शारीरिक लम्बाई की कमी व अत्यधिक कुपोषण के कारण 21 प्रतिशत बच्चों में भार एवं लम्बाई दोनों की कमी पाई गई है।

देश में 6 से 23 माह के मध्य की आयु वाले मात्र 9.6 प्रतिशत बच्चों को ही पर्याप्त पोषण प्राप्त हो पा रहा है। इनमें 11.6 प्रतिशत शहरी व 8.8 प्रतिशत ग्रामीण बच्चों का है। 24 माह के आयु तक पहुँचते–पहुँचते बच्चे वृद्विरूद्व (स्टंटेड) हो जाते हैं। पाँच वर्ष आयु वर्ग से कम आयु के 38.4 प्रतिशत बच्चे विकासरूद्ध हैं। इनमें 31 प्रतिशत शहरी तथा 41.2 प्रतिशत ग्रामीण बच्चे हैं।

विश्व में मात्र 35 प्रतिशत शिशुओं को जीवन के प्रथम चार माह के अर्न्तगत ही मां का दूध प्राप्त होता है, इसके अतिरिक्त अधिकतर शिशुओं का पूरक आहार समय से पहले या बहुत देर से आरम्भ हो पाता है। यह पूरक आहार पोषाहारीय दृष्टि से अपर्याप्त एवं असुरक्षित होता है। शैशवावस्था, बाल्यावस्था में अनुचित पोषाहार पद्धतियां कुपोषण को जन्म देती हैं। जिससे शिशुओं का ज्ञानात्मक एवं भावात्मक विकास भी क्षीण हो जाता है। अनुपयुक्त पोषण पद्धतियां सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए गम्भीर अवरोधक सिद्ध हुई है।

बच्चों में कुपोषण महिलाओं में शिशुओं एवं बच्चों की पोषाहारीय आवश्यकताओं के सम्बन्ध में अज्ञानता एवं स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की सुलभता में कमी का परिणाम है। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवसों का आयोजन मातृ एवं बाल स्वस्थ्य सम्बन्धी सेवायें प्रदान करने के लिए की जाती है। यह उपाय लाभार्थियों एवं सेवाओं के मध्य दूरी को कम के लिए किया जा रहा है। अति गंभीर कुपोषण के प्रबन्धन हेतु सरकार द्वारा पोषण केन्द्रों की स्थापना की गई है। सरकार द्वारा आँगनबाड़ी केन्द्रों पर वास्तविक रूप से उपस्थित सभी 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों, गर्भवती एवं धात्री माताओं को पूरक पोषाहार उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही 3–6 आयु वर्ग के सभी विद्यालय पूर्व बच्चों को पूरक पोषाहार से लाभान्वित किया जा रहा है।

बच्चों के देखभाल, आहार व पोषण के क्षेत्र में अनेक अध्ययन हुए हैं। कुलबा, के.बी (2006) ने 'कॉन्सनट्रेसन ऑन गुड चाइल्ड केयर प्रैक्टिस एण्ड न्यूट्रीशन स्टेट्स इन अरबन दर–से–इस्लाम तन्जानिया' विषय का अध्ययन किया। यादृच्छिक रूप से 6–24 माह के आयु वर्ग वाले शिशुओं की माताओं का चयन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि शहरी समुदाय में कुपोषण तथा मृत्युदर अधिक थी क्योंकि शिशु के खानपान सम्बन्धी कार्यव्यवहार अपर्याप्त था। साथ ही माताओं की सेवास्तर तथा शैक्षिक स्तर भी शिशुओं की देखभाल सम्बन्धी कार्यव्यवहार को प्रभावित करते हैं। मैरी के. क्रिपिन्सेक एवं अन्य (2004) ने 'मैटरनल इम्पलॉयमेन्ट एण्ड चिल्ड्रेन न्यूट्रीशन' विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि पूर्ण सेवारत, अंशकालिक सेवारत एवं गैर सेवारत माताओं के शिशुओं का पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार भिन्न–भिन्न था।

इसी प्रकार इमान्स मुहम्मद एवं अन्य (2014) ने 'नॉलेज, एट्टीट्यूड एंड प्रैक्टिस ऑफ ब्रेस्टफीडिंग एण्ड विनिंग एमंग मदर्स ऑफ चिल्ड्रेन अपटू 2 इयर्स ओल्ड इन रूरल एरिया इन इ–मामिया गवरमेन्ट इजिप्ट', का अध्ययन किया। इसका मुख्य उद्देश्य मिश्र के ग्रामीण क्षेत्रों की माताओं में स्तनपान एवं पूरक आहार की जानकारी एवं कार्यव्यवहार पर शैक्षिक पृष्ठभूमि व आयु का प्रभाव ज्ञात करना था। अध्ययन हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा 307 ग्रामीण मातायें जिनके 2 वर्ष या उससे कम आयु के शिशु थे को सम्मिलित किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि अधिकांश माताओं को स्तनपान के लाभ के विषय में जानकारी थी। 92.5 प्रतिशत माताओं ने स्तनत्याजन को स्तनपान विराम के रूप में परिभाषित किया। स्तनपान एवं पूरक आहार के प्रति अधिकांश माताओं में सकारात्मक व्यवहार पाया गया।

इस प्रकार शहरी एवं ग्रामीण परिवेश दो अलग–अलग जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। समुदाय में विद्यमान सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक स्थितियों एवं सुविधाओं के आधार पर नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति एवं जीवन शैली में पर्याप्त भिन्नता होती है। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को व्यवसायों में अधिक अवसर प्राप्त होने के कारण पुरूषों के साथ समान रूप से प्रगति के पथ पर आगे बढने का प्रयास कर रही हैं। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का प्रभाव उनकी मानसिकता पर पड़ रहा है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के भिन्न–भिन्न परिवेशगत परिस्थितियां माताओं के पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार को भी भिन्न–भिन्न रूप से प्रभावित करती है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में भी यह देखने का प्रयास किया गया है कि शिशुओं के पूरक आहार सम्बन्धी विभिन्न क्रियाकलापों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण माताओं के कार्य व्यवहार में तुलनात्मक रूप से कोई सार्थक अन्तर है अथवा नहीं।

अध्ययन का उद्देश्य

शहरी एवं ग्रामीण माताओं में शिशु के पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

शहरी एवं ग्रामीण माताओं में शिशु के पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध की परिसीमायें

यह शोध अध्ययन मात्र पौड़ी जनपद के तहसील श्रीनगर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की माताओं में शिशु के पूरक आहार के सम्बन्ध में कार्यव्यवहार के अध्ययन तक ही सीमित है।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन हेतु उत्तराखण्ड के जनपद पौड़ी के श्रीनगर तहसील से 50 शहरी एवं 50 ग्रामीण माताओं अर्थात कुल 100 माताओं, जिनके 6 से 24 माह तक के बच्चे थे, का चयन किया गया।

प्रविधि एवं उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्शों का चयन सोद्देश्य यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। ऑकड़ों के संग्रह के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन एवं संकेतन के पश्चात् तथ्यों का एस.पी. एस.एस. (SPSS) 16.0 पैकेज द्वारा विश्लेषण किया गया। जिन परिमापन प्रविधियों का प्रयोग किया गया, उसमें मध्यमान, मानक विचलन व 't' टेस्ट सम्मिलित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी–1

शिशु को पूरक आहार उसकी आयु के अनुसार देने सम्बन्धी कार्य व्यवहार

N-100

उत्तरदाता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
शहरी	50	1.60	0.639	0.778
ग्रामीण	50	1.50	0.647	

df-98 sig. value at .05 Level= 0.439

उपरोक्त सारणी–1 में प्रस्तुत तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिशु को पूरक आहार उसकी आयु के अनुसार देने सम्बन्धी कार्य व्यवहार के सम्बन्ध में गामीण माताओं का मध्यमान 1.50, शहरी माताओं का मध्यमान 1.60 पाया गया तथा मध्यमान में 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जिसकी पुष्टि पी मान (p=0.439>0.05) से होती है। इस प्रकार उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण और शहरी माताओं के शिशु के पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–2

शिशु का पूरक आहार तैयार करने सम्बन्धी कार्य व्यवहार

N-100

उत्तरदाता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
शहरी	50	1.82	0.388	2.805
ग्रामीण	50	1.50	0.707	

df-98
sig. value at .05= 0.006

सारणी–2 में प्रस्तुत तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिशु हेतु पूरक आहार तैयार करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार के सम्बन्ध में शहरी माताओं का मध्यमान 1.82, ग्रामीण माताओं के मध्यमान 1.50 से अधिक पाया गया। शहरी एवं ग्रामीण माताओं के मध्यमान में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया जिसकी पुष्टि पी मान (p=0.006<0.05) से होती है। इस प्रकार शिशु हेतु पूरक आहार तैयार करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार से प्राप्त मध्यमान के मान के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण माताओं के कार्यव्यवहार के मध्य सार्थक अन्तर है, जो कि शहरी माताओं के पक्ष में हैं।

सारणी–3

शिशु को हरी सब्जियां, फल एवं आयोडीन युक्त नमक खिलाने सम्बन्धी कार्यव्यवहार

N-100

उत्तरदाता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
शहरी	50	1.34	0.658	0.140
ग्रामीण	50	1.32	0.768	

df-98 sig. value at .05= 0.889

उपरोक्त सारणी–3 में प्रस्तुत तथ्यों से स्पष्ट है कि शिशु को हरी सब्जियां, फल एवं आयोडीन युक्त नमक खिलाने सम्बन्धी कार्यव्यवहार के सम्बन्ध में शहरी माताओं का मध्यमान 1.34 व ग्रामीण माताओं का मध्यमान 1.32 पाया गया। अतः शहरी व ग्रामीण माताओं के कार्यव्यवहार में सार्थकता मान 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जिसकी पुष्टि पी मान (p=0.889>0.05) से होती है। अतः स्पष्ट है कि

ग्रामीण और शहरी माताओं के उक्त कार्यव्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–4

शिशु को सौम्य आहार देने सम्बन्धी कार्यव्यवहार

N-100

उत्तरदाता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
शहरी	50	1.18	0.825	1.327
ग्रामीण	50	0.96	0.832	

df-98 sig. value at .05= 0.187

उपरोक्त सारणी–4 में प्रस्तुत तथ्यों से स्पष्ट है कि शिशु को सौम्य आहार देने सम्बन्धी कार्यव्यवहार के सम्बन्ध में शहरी माताओं का मध्यमान 1.18, ग्रामीण माताओं का मध्यमान 0.96 पाया गया। परन्तु 0.05 स्तर पर ग्रामीण और शहरी माताओं के उक्त कार्यव्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जिसकी पुष्टि पी मान (p=0.187>0.05) से होती है।

सारणी–5

शिशु के आहार में सभी पोषक तत्व सम्मिलित करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार

N-100

उत्तरदाता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
शहरी	50	1.30	0.707	0.142
ग्रामीण	50	1.28	0.701	

df-98 sig. value at .05= 0.887

सारणी–5 में प्रस्तुत तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिशु के आहार में सभी पोषक तत्व सम्मिलित करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार के सम्बन्ध में शहरी माताओं का मध्यमान 1.30, ग्रामीण माताओं का मध्यमान 1.28 पाया गया तथा मध्यमान में सार्थकता मान 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जिसकी पुष्टि पी मान (p=0.887>0.05) से होती है। इस प्रकार उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण और शहरी माताओं के उक्त कार्यव्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–6

शिशु को पूरक आहार के साथ स्तनपान कराने सम्बन्धी कार्यव्यवहार

N-100

उत्तरदाता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
शहरी	50	1.82	0.388	1.974
ग्रामीण	50	1.62	0.602	

df-98 sig. value at .05= 0. 051

सारणी–6 में प्रस्तुत तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिशु को पूरक आहार के साथ स्तनपान कराने सम्बन्धी कार्यव्यवहार के सम्बन्ध में शहरी माताओं का मध्यमान 1.82 जोकि ग्रामीण माताओं के मध्यमान 1.62 से अधिक है। परन्तु ग्रामीण और शहरी माताओं के उक्त कार्यव्यवहार में सार्थकता मान 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जिसकी पुष्टि पी मान (p=0.051>0.05) से होती है।

सारणी–7

शिशु की व्यक्तिगत् स्वच्छता सम्बन्धी कार्यव्यवहार

N-100

उत्तरदाता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
शहरी	50	1.74	0.443	1.559
ग्रामीण	50	1.58	0.574	

df-98 sig. value at .05= 0.122

सारणी–7 में प्रस्तुत तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिशु को भोजन कराने से पूर्व व भोजन करने के, पश्चात् व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखने सम्बन्धी कार्यव्यवहार के सम्बन्ध में शहरी माताओं का मध्यमान 1.74 है जो कि ग्रामीण माताओं का मध्यमान 1.58 से अधिक है। परन्तु शहरी और ग्रामीण माताओं के उक्त कार्यव्यवहार में सार्थकता मान 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर

नहीं पाया गया जिसकी पुष्टि पी मान (p=0.122>0.05) से होती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार ग्रामीण और शहरी माताओं में शिशु हेतु पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार के विभिन्न क्रियाकलापों में क्रमशः 'शिशु को पूरक आहार उसकी सही आयु के अनुसार देने,' 'हरी सब्जियां, फल एवं आयोडीन युक्त नमक खिलाने', शिशु को सौम्य आहार देने' तथा 'शिशु के आहार में सभी पोषक तत्व सम्मिलित करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार' में ग्रामीण और शहरी माताओं के कार्यव्यवहार में कोई सार्थक नहीं अन्तर पाया गया। अतः'ग्रामीण और शहरी माताओं में शिशु के पूरक आहार सम्बन्धी कार्यव्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। यह परिकल्पना स्वीकृत हुई है। मात्र एक क्रियाकलाप 'शिशु हेतु पूरक आहार स्वयं तैयार करने में शहरी और ग्रामीण माताओं के कार्यव्यवहार' में सार्थक अन्तर है। जो कि तुलनात्मक रूप से शहरी माताओं के पक्ष है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिशु को पूरक आहार देने सम्बन्धी अधिकांश शहरी एवं ग्रामीण माताओं के कार्यव्यवहार में समानता पायी गई। इसका सम्भावित कारण यह है कि पूरक आहार खिलाने की एक व्यवहारिक प्रक्रिया है। जोकि सभी परिवारों, समुदायों, धर्मों सभी वर्गों के समुदायों और परिवारों में समानरूप से पायी जाती है। इसके साथ ही शिशु के पूरक आहार सम्बन्धी जानकारी परिवार, पड़ोस, समाचार पत्रों, टीवी, मोबाइल, इन्टरनेट, मल्टीमीडिया इत्यादि के माध्यम से शहरों के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में सरलता से प्राप्त हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा, सूचना एवं संचार के माध्यम से जागरूकता बढ़ रही है। जिससे माताओं की मनोवृत्ति एवं कार्यव्यवहार में भी परिर्वतन परिवर्तन आ रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

बक्शी, बी.के. (संस्करण 2005–06) : 'आहार एवं पोषण के मूल आधार', प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2.

डॉ0 सिंह, बृन्दा, (छठवां संस्करण 2013) : 'मातृ एवं शिशु कल्याण,' पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ सं०–171.

डॉ0 अग्रवाल, नीता, एवं डॉ0 निगम, वीना, (संस्करण 20114/15): 'मातृकला एवं बाल विकास,' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2, पृष्ठ सं०–210–214.

कुरूक्षेत्र, (जुलाई 2017) : प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, अंक–52, पृ0सं0–28,29,32,40.

कुलबा, के.बी (2006) : 'कॉन्सनट्रेसन ऑन गुड चाइल्ड केयर प्रैक्टिस एण्ड न्यूट्रीशन स्टेट्स इन अरबन दर–से–इस्लाम तन्जानिया', फूड न्यूट्रीशन, बुल–2006, वॉल्यूम–3, पृष्ठ सं०–236–244.

मैरी के. क्रिपिन्सेक एवं अन्य (2004) : 'मैटरनल इम्पलॉयमेन्ट एण्ड चिल्ड्रेन न्यूट्रीशन', इलेक्ट्रॉनिक पब्लिकेशन फ्रॉम दी फूड एन न्यूट्रीशन रिसर्च प्रोग्राम–2004, वाल्यूम–2,

स्वर्णकार, केशव, (संस्करण 2016) : 'कम्यूनिटि हेल्थ नर्सिग', प्रथम खण्ड, प्रकाशन, एन.आर. ब्रदर्स, इन्दौर, मध्यप्रदेश, पृ0 सं0–345.

शिशु तथा बाल पोषण एवं राष्ट्रीय दिशा–निर्देश, (द्वितीय संस्करण–2006) : महिला एवं बाल विकास मंत्रालय खाद्य बोर्ड भारत सरकार, पृष्ठ सं०–1–13.

योजना, (सितंबर 2016) % :प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, अंक–9, पृ०–21.

योजना, (अक्टूबर 2017) : प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, अंक–10, पृ०सं0–7.

मुहम्मद, इमान्स व इमान, आर. गाजवे (2014) % ''नॉलेज, एटिट्यूड एण्ड प्रैक्टिसेस ऑफ ब्रैस्टफिडिंग एण्ड विनिंग एमंग मदर्स ऑफ चिल्ड्रन अपटु 2 ईयर्स ओल्ड इन रूरल एरिया इन गवरमेन्ट इजिप्ट. (www.researchgat.net)

http://rchiips.org/nfhs/NFHS-4Report.shtml.